The Integral Spirit of Bharat : An Eulogy

Bhārata Ekātmatā Stotra—An Explanation

(With Coloured Illustrations)

ॐ सच्चिदानन्दरूपाय नमोस्तु परमात्मने ।
ज्योतिर्मयस्वरूपाय विश्वमाङ्गल्यमूर्तये ॥१॥

ॐ ज्योतिर्मय स्वरूप वाले; विश्व-कल्याण के मूर्तिमान रूप,
सच्चिदानन्द (सत्+चित्+आनन्द) परमात्मा को नमस्कार है। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

प्रकृतिः पञ्चभूतानि ग्रहा लोका स्वरास्तथा ।
दिशः कालश्च सर्वेषां सदा कुर्वन्तु मङ्गलम् ॥२॥

(तीन गुणों से युक्त) प्रकृति, पाँच भूत, (नौ) ग्रह, (तीन) लोक, (सात) स्वर, दसों दिशाएं और (तीनों काल) सदा सब का मंगल करें। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

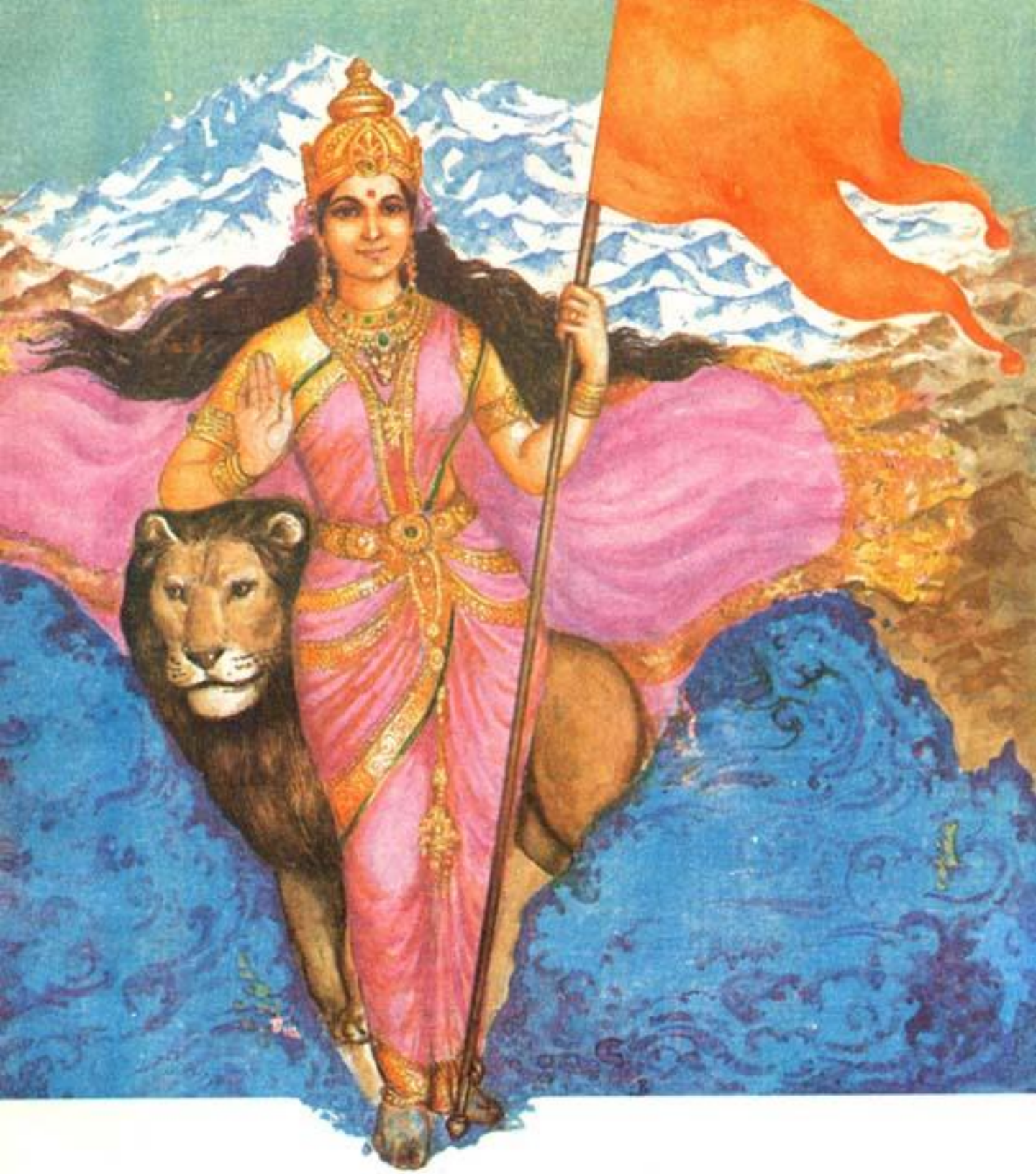

रत्नाकराधौतपदां हिमालयकिरीटिनीम् ।
ब्रह्मराजर्षिरत्नाढ्यां वन्दे भारतमातरम् ॥३ ॥

रत्नों की खान समुद्र जिसके पैर धोता है, हिमालय जिसका मुकुट है, ब्रह्मर्षियों और राजर्षियों रूपी रत्नों से समृद्ध ऐसी भारतमाता की मैं वन्दना करता/करती हूँ। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

महेन्द्रो मलयः सह्यो देवतात्मा हिमालयः ।
ध्येयो रैवतको विन्ध्यो गिरिश्चारावलिस्तथा ॥४ ॥

(१) महेन्द्र पर्वत, (२) मलय पर्वत (नीलगिरि), (३) सह्याद्रि, (४) हिमालय, (५) रैवतक (गिरनार) पर्वत, (६) विन्ध्याचल,
तथा (७) अरावली पर्वत ध्यान करने योग्य हैं। (भारत एकात्मता स्तोत्र)

गङ्गा सरस्वती सिन्धुर्ब्रह्मपुत्रश्च गण्डकी ।
कावेरी यमुना रेवा कृष्णा गोदा महानदी ॥५ ॥

(१) गंगा, (२) सरस्वती, (३) सिन्धु, (४) ब्रह्मपुत्र, (५) गण्डकी (गंडक), (६) कावेरी, (७) यमुना, (८) रेवा (नर्मदा),
(९) कृष्णा, (१०) गोदावरी, (११) महानदी (भारत एकात्मता स्तोत्र)

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्चि अवन्तिका ।
वैशाली द्वारिका ध्येया पुरी तक्षशिला गया ॥६ ॥

(१) अयोध्या, (२) मथुरा, (३) हरिद्वार (माया), (४) काशी (वाराणसी), (५) काञ्ची (कांचीपुरम्), (६) अवन्तिका (उज्जयिनी), (७) वैशाली, (८) द्वारिका, (९) जगन्नाथपुरी, (१०) तक्षशिला, (११) गया

प्रयागः पाटलीपुत्रं विजयानगरं महत् ।
इन्द्रप्रस्थं सोमनाथः तथाऽमृतसरः प्रियम् ॥७ ॥

(१) प्रयाग, (२) पाटलीपुत्र (पटना), (३) विजयनगर, (४) इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली), (५) सोमनाथ, तथा (६) अमृतसर

चतुर्वेदाः पुराणानि सर्वोपनिषदस्तथा।
रामायणं भारतं च गीता सद्दर्शनानि च ॥८॥

१- चार वेद, २- (अठारह) पुराण, ३- सब उपनिषद्, ४-रामायण, ५-महाभारत, ६-गीता (महाभारत का विशिष्ट अंश), तथा ७- सत् दर्शन (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व-मीमांसा और उत्तर मीमांसा) (चार एकात्मता स्तोत्र)

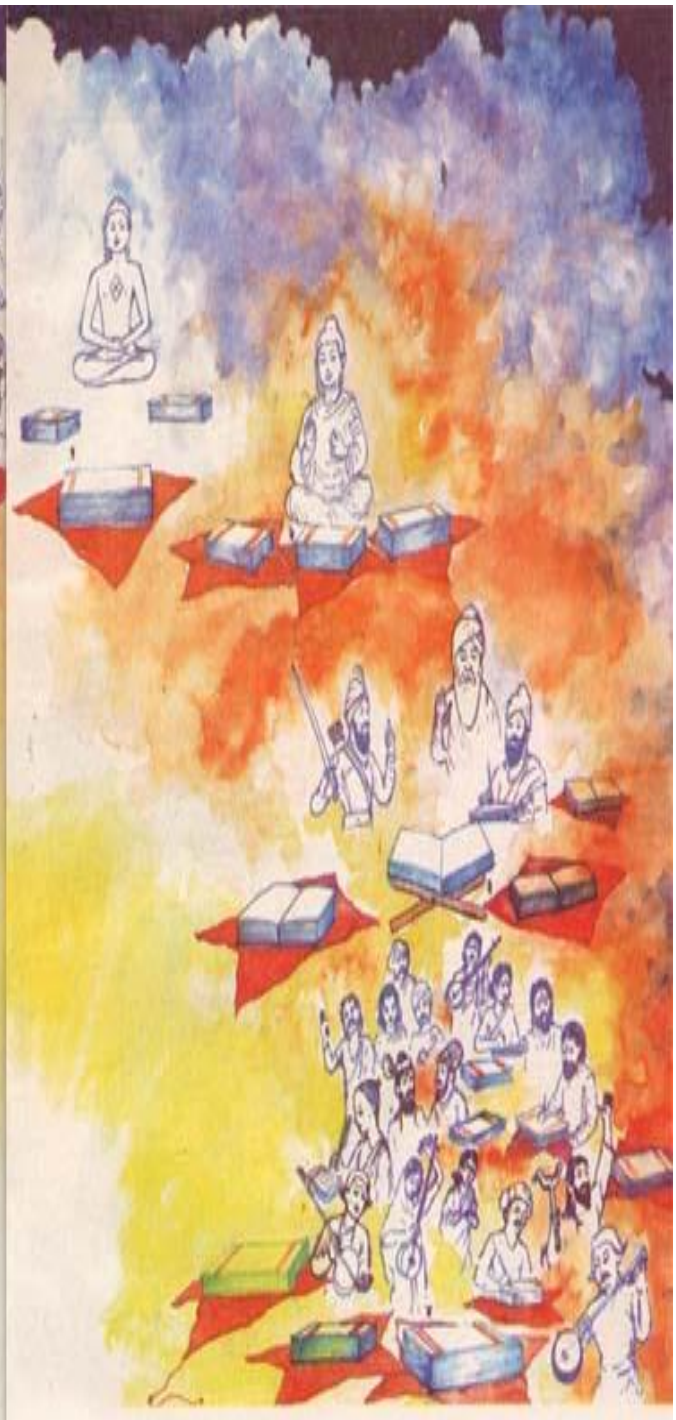

जैनागमास्त्रिपिटका गुरुग्रन्थः सतां गिरः।
एष ज्ञाननिधिः श्रेष्ठः श्रद्धेयो हृदि सर्वदा ॥९॥

(९) जैन आगम ग्रंथ, (१०) बौद्ध त्रिपिटक, (११) गुरु ग्रंथ साहिब, और (१२) संतो की वाणी – ये (इस श्लोक में तथा पूर्व-श्लोक में वर्णित) श्रेष्ठ ज्ञाननिधियाँ सदैव हृदय में श्रद्धा करने योग्य हैं। (चार एकात्मता स्तोत्र)

अरुन्धत्यनसूया च सावित्री जानकी सती ।
द्रौपदी कण्णगी गार्गी मीरा दुर्गावती तथा ।। १०।।

(१) अरुन्धती, (२) अनुसूया, (३) सावित्री, (४) सीता, (५) सती,
(६) द्रौपदी, (७) कण्णगी, (८) गार्गी, (९) मीराबाई, तथा (१०) दुर्गावती

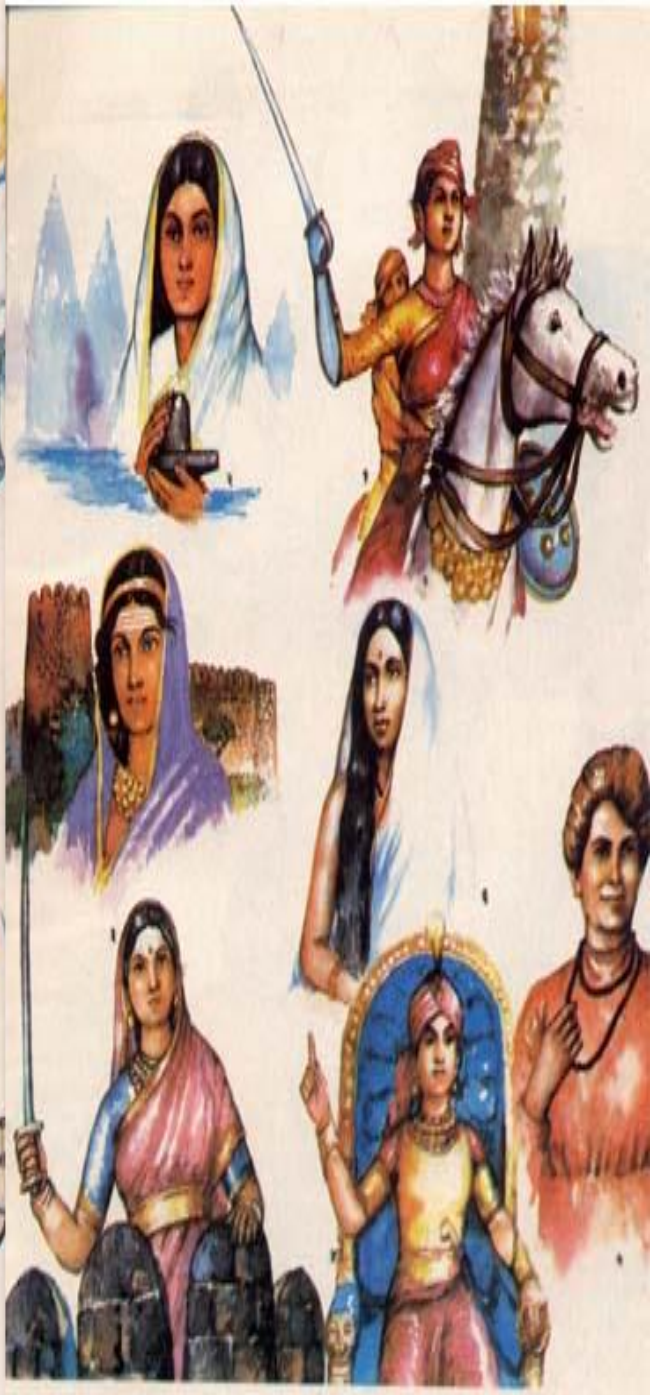

लक्ष्मीरहल्या चन्नम्मा रुद्रमाम्बा सुविक्रमा।
निवेदिता सारदा च प्रणम्या मातृदेवताः ॥११॥

(१) लक्ष्मीबाई, (२) अहल्या, (३) चन्नम्मा, (४) रुद्रमाम्बा (रुद्राम्बा), (५) भगिनी निवेदिता, (६) सारदा माँ – ये (तथा पूर्वश्लोक में वर्णित) प्रणाम करने योग्य मातृदेवता हैं। (भारत एकात्मता स्तोत्र)

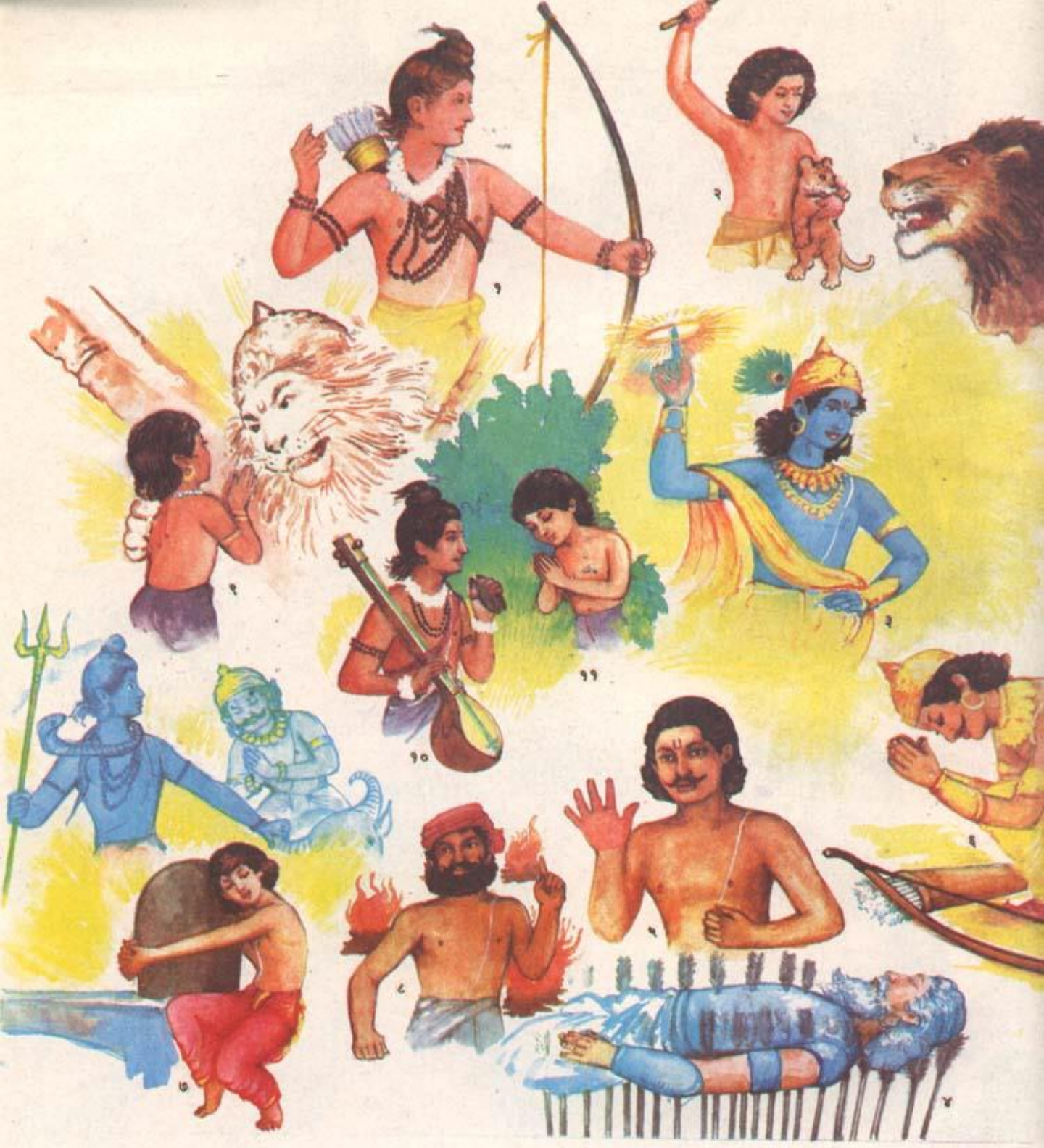

श्रीरामो भरतः कृष्णो भीष्मो धर्मस्तथार्जुनः ।
मार्कण्डेयो हरिश्चन्द्रः प्रह्लादो नारदो ध्रुवः ॥१२॥

(१) (मर्यादापुरुषोत्तम) श्री रामचन्द्र, (२) भरत, (३) श्रीकृष्ण, (४) भीष्म, (५) धर्मराज युधिष्ठिर, (६) अर्जुन, (७) मार्कण्डेय ऋषि, (८) राजा हरिश्चन्द्र, (९) भक्त प्रह्लाद, (१०) देवर्षि नारद, (११) ध्रुव *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

हनुमाञ्जनको व्यासो वसिष्ठश्च शुको बलिः ।
दधीचिविश्वकर्माणौ पृथुवाल्मीकिभार्गवाः ॥१३॥

(१) हनुमान्, (२) राजा जनक, (३) वेदव्यास, (४) मुनि वसिष्ठ, (५) शुकदेव, (६) राजा बलि, (७) ऋषि दधीचि, (८) विश्वकर्मा, (९) महाराजा पृथु, (१०) मुनि वाल्मीकि, (११) परशुराम *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

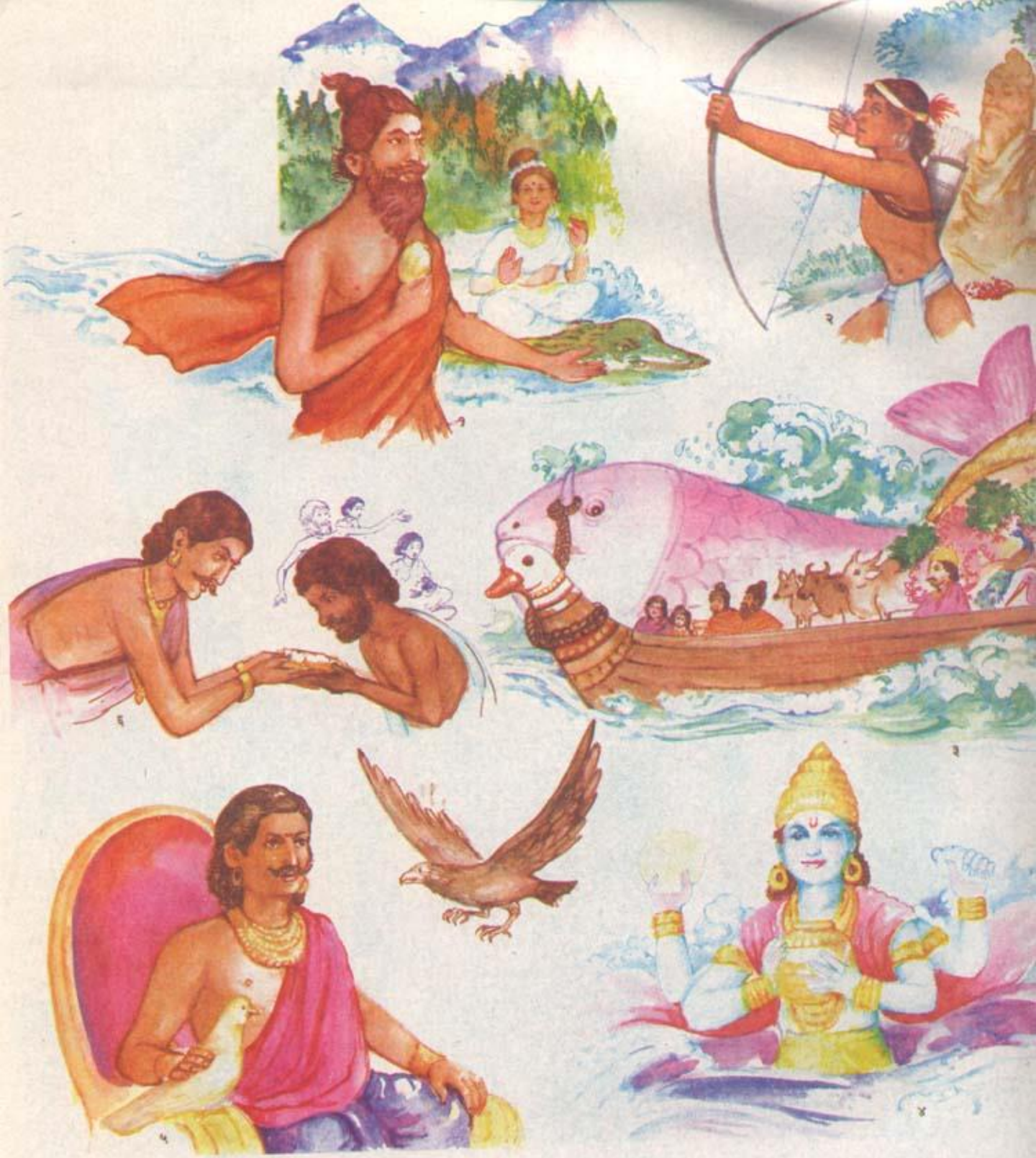

भगीरथश्चैकलव्यो मनुर्धन्वन्तरिस्तथा।
शिबिश्च रन्तिदेवश्च पुराणोद्गीतकीर्तयः ॥१४॥

(१) राजा भगीरथ, (२) एकलव्य, (३) मनु, (४) धन्वन्तरि, (५) राजा शिबि, और(६) राजा रन्तिदेव, जिन (सब) की कीर्ति पुराणों में गायी गयी है। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

बुद्धा जिनेन्द्रा गोरक्षः पाणिनिश्च पतञ्जलिः ।
शङ्करो मध्वनिम्बार्कौ श्रीरामानुजवल्लभौ ॥१५॥

(१) (सारे) बुद्ध, (२) (सभी) तीर्थंकर, (३) गुरु गोरखनाथ, (४) पाणिनि, (५) पतञ्जलि, (६) (आद्य) शंकराचार्य, (७) मध्वाचार्य, (८) निम्बार्काचार्य, (९) रामानुजाचार्य, (१०) वल्लभाचार्य *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

झूलेलालोऽथ चैतन्यः तिरुवल्लुवरस्तथा।
नायन्मारालवाराश्च कम्बश्च बसवेश्वरः ॥१६॥

(१) झूलेलाल, (२) चैतन्य महाप्रभु, (३) तिरुवल्लुवर, (४) नायन्मार सन्त, (५) आलवार सन्त, (६) कवि कम्बन्, (७) बसवेश्वर *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

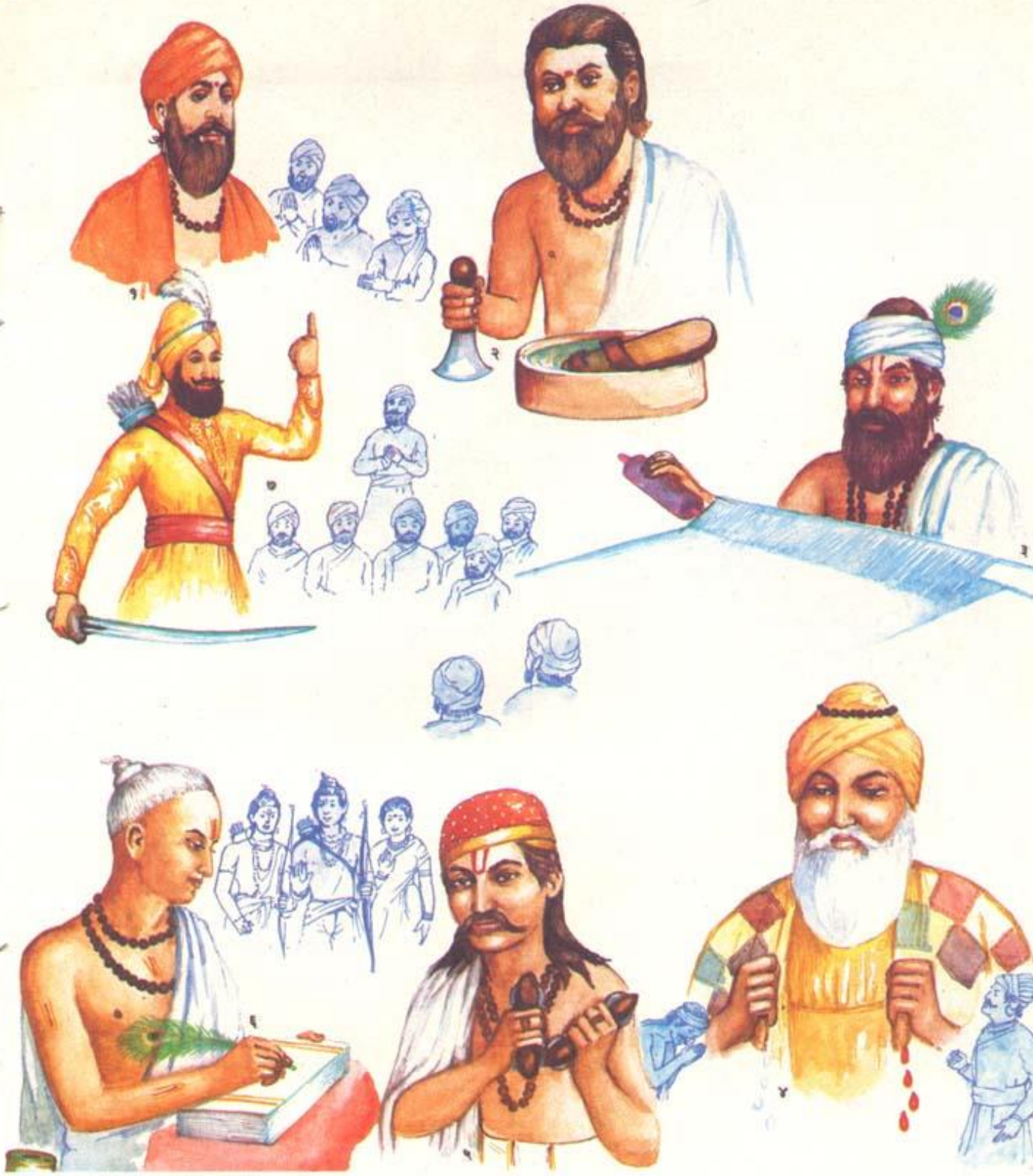

देवलो रविदासश्च कबीरो गुरुनानकः ।
नरसिस्तुलसीदासो दशमेशो दृढ़व्रतः ॥१७॥

(१) देवल, (२) सन्त रविदास, (३) सन्त कबीरदास, (४) गुरु नानक, (५) भक्त नरसी, (६) गोस्वामी तुलसीदास,
(७) दृढ़व्रती गुरु गोविन्द सिंह *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

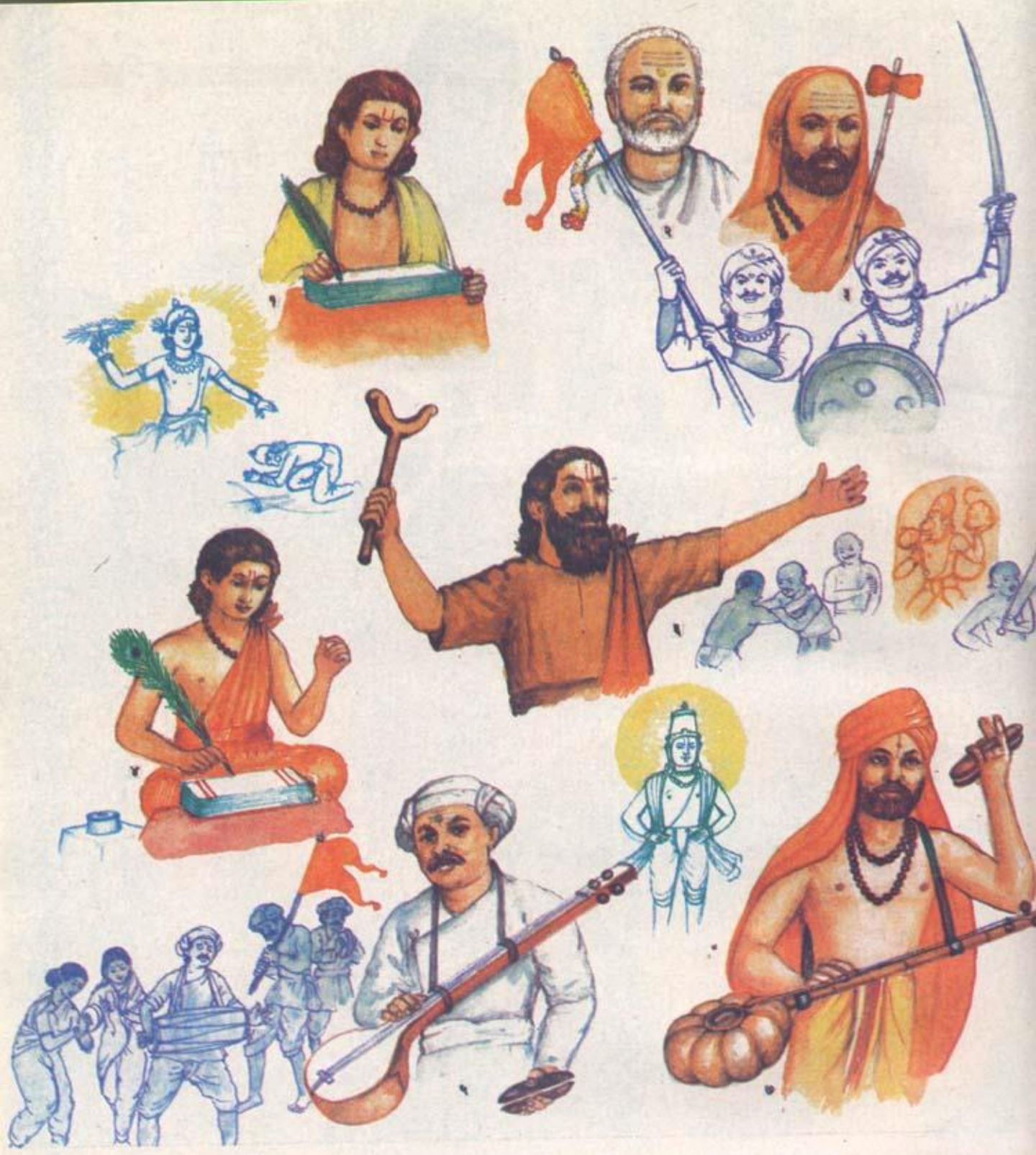

श्रीमत् शङ्करदेवश्च बन्धू सायणमाधवौ ।
ज्ञानेश्वरस्तुकारामो रामदासः पुरन्दरः ॥१८॥

(१) शंकरदेव, (२) सायणाचार्य, (३) माधवाचार्य (विद्यारण्य स्वामी), (४) सन्त ज्ञानेश्वर, (५) संत तुकाराम, (६) समर्थ स्वामी रामदास, (७) पुरन्दरदास *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

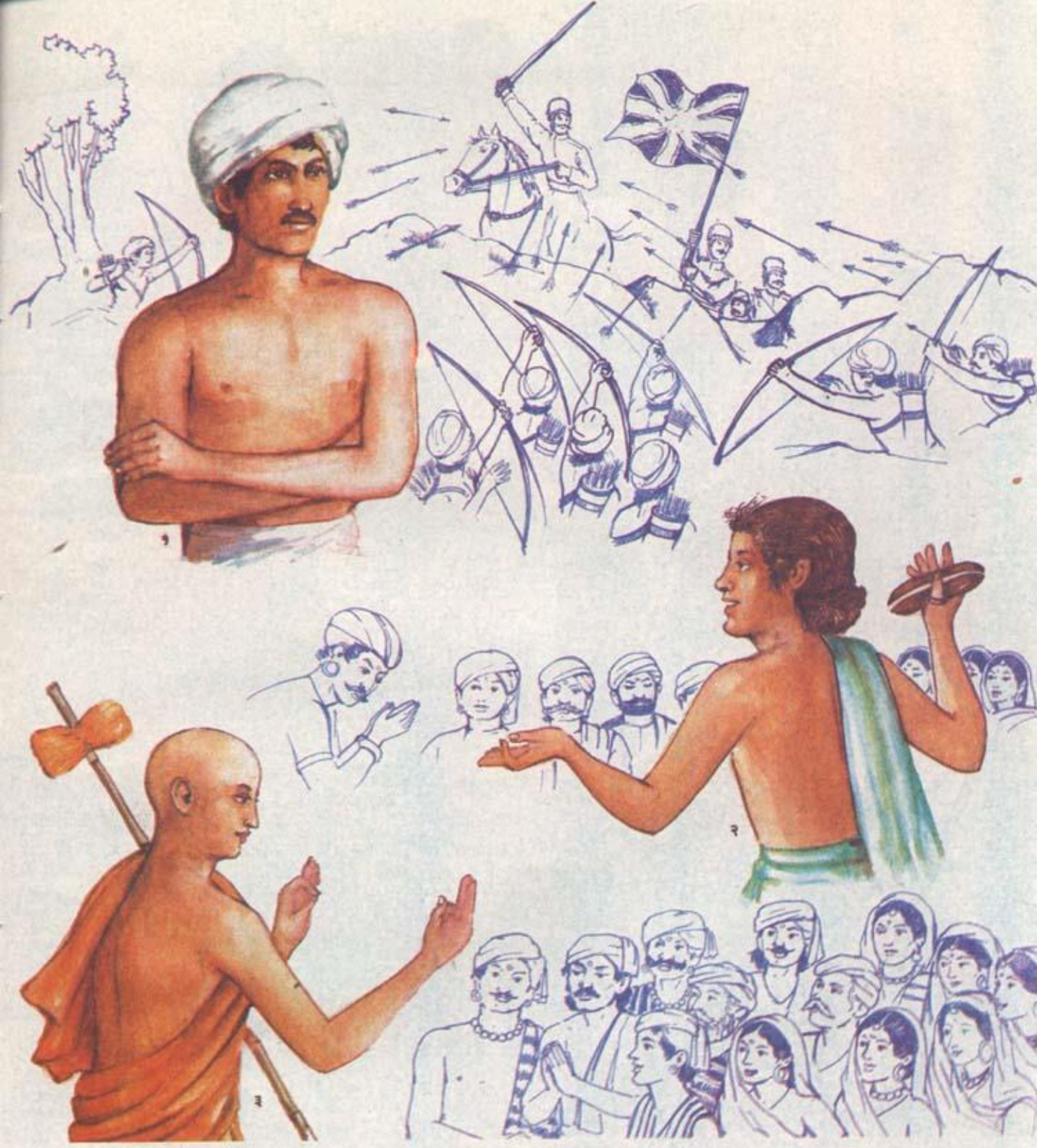

बिरसा सहजानन्दो रामानन्दस्तथा महान्।
वितरन्तु सदैवैते दैवीं सद्गुणसम्पदम् ॥१६॥

(१) बिरसा, (२) स्वामी सहजानन्द, और (३) स्वामी रामानन्द — ये (इस श्लोक में तथा पूर्व-श्लोकों में वर्णित) महापुरुष सदा सद्गुणरूपी दैवी सम्पदा वितरित करें। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

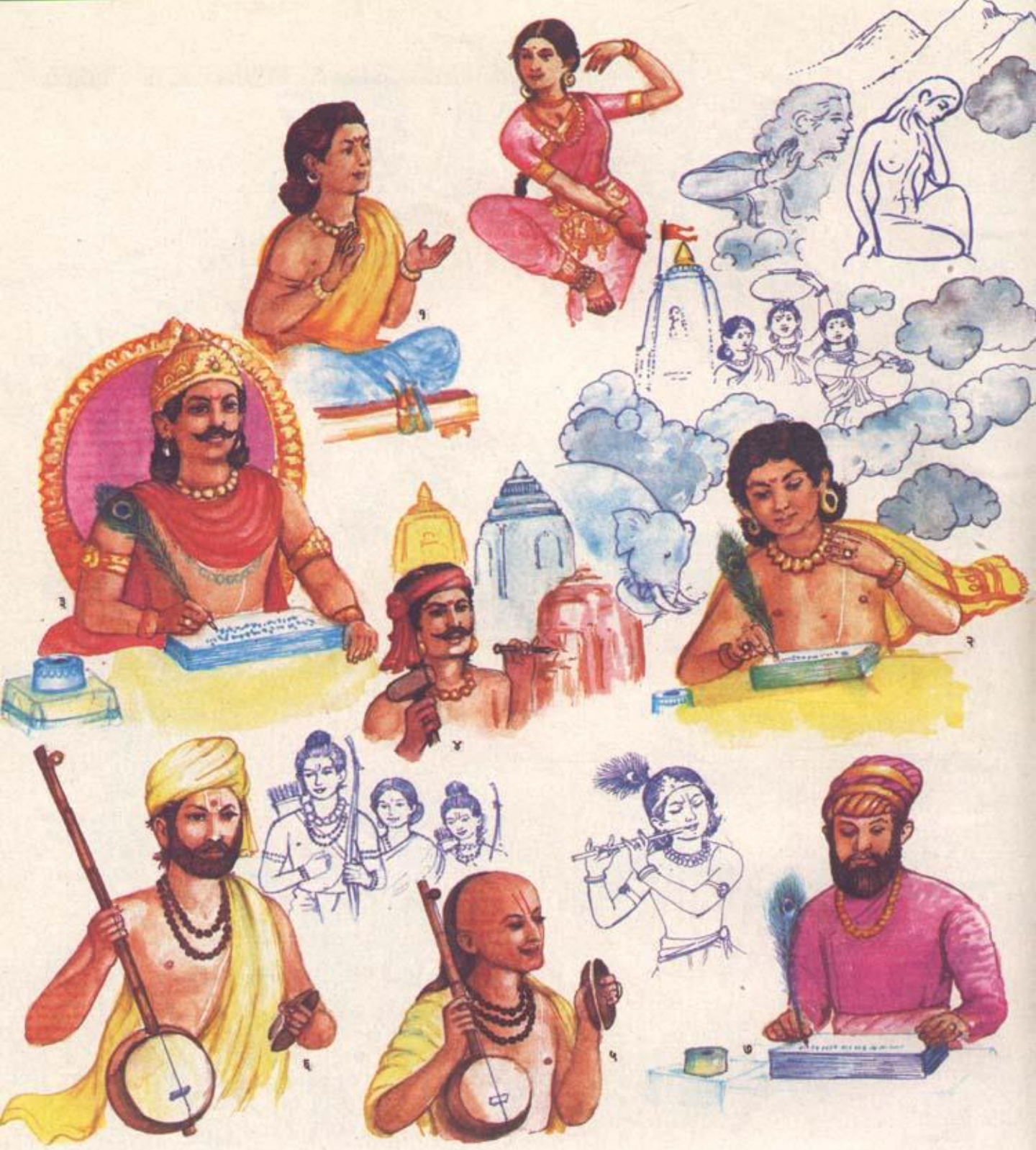

भरतर्षिः कालिदासः श्रीभोजो जकणस्तथा ।
सूरदासस्त्यागराजो रसखानश्च सत्कविः ॥२०॥

(१) नाट्याचार्य भरत ऋषि, (२) महाकवि कालिदास, (३) राजा भोज, (४) जकणाचार्य, (५) सूरदास, (६) त्यागराज, (७) रसखान कवि *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

रविवर्मा भातखण्डे भाग्यचन्द्रः स भूपतिः।
कलावन्तश्च विख्याताः स्मरणीया निरन्तरम् ॥२१॥

(१) राजा रवि वर्मा, (२) भातखण्डे और (३) राजा भाग्यचन्द्र (तथा पूर्वश्लोक में वर्णित सब) विख्यात कलावन्त हुए हैं जो निरन्तर स्मरण रखने योग्य हैं। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

अगस्त्यः कम्बुकौण्डिन्यौ राजेन्द्रश्चोलवंशजः ।
अशोकः पुष्यमित्रश्च खारवेलः सुनीतिमान् ॥२२॥

(१) अगस्त्य ऋषि (२) कम्बु स्वयम्भुव, (३) कौण्डिन्य, (४) राजेन्द्र चोल, (५) अशोक, (६) पुष्यमित्र शुंग, (७) अच्छी नीति वाले खारवेल *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

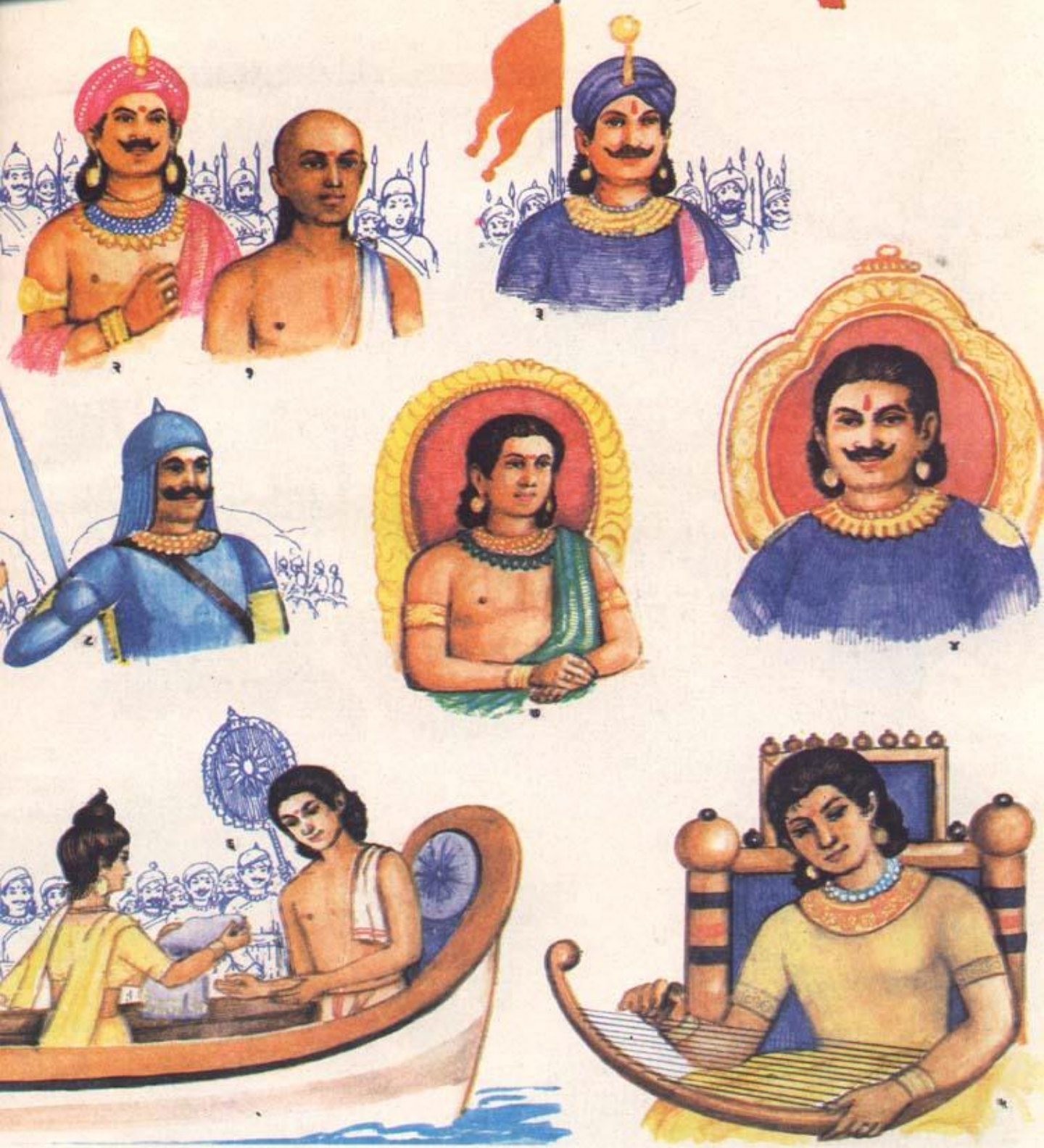

चाणक्यचन्द्रगुप्तौ च विक्रमः शालिवाहनः।
समुद्रगुप्तः श्रीहर्षः शैलेन्द्रो बप्परावलः ॥२३॥

(१) चाणक्य, (२) चन्द्रगुप्त मौर्य, (३) विक्रमादित्य, (४) शालिवाहन, (५) सम्राट् समुद्रगुप्त, (६) महाराजा हर्षवर्द्धन, (७) महाराजा शैलेन्द्र, (८) बाप्पा रावल *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

लाचिद् भास्करवर्मा च यशोधर्मा च हूणजित्।
श्रीकृष्णदेवरायश्च ललितादित्य उद्बलः ॥२४॥

(१) लाचित् बड़फुकन, (२) भास्कर वर्मा, (३) हूणजेता यशोधर्मा, (४) राजा कृष्णदेवराय,
(५) प्रतापी ललितादित्य *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

मुसुनूरिनायकौ तौ प्रतापः शिवभूपतिः ।
रणजित्सिंह इत्येते वीरा विख्यातविक्रमाः ॥२५॥

मुसुनूरि नायकद्वय — अप्पय नायक तथा प्रोलय नायक, (२) महाराणा प्रताप, (३) छत्रपति शिवाजी, (४) महाराजा रणजीत सिंह — ये (इस श्लोक तथा पूर्वश्लोकों में वर्णित) विख्यात पराक्रमशाली वीर पुरुष हुए हैं। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

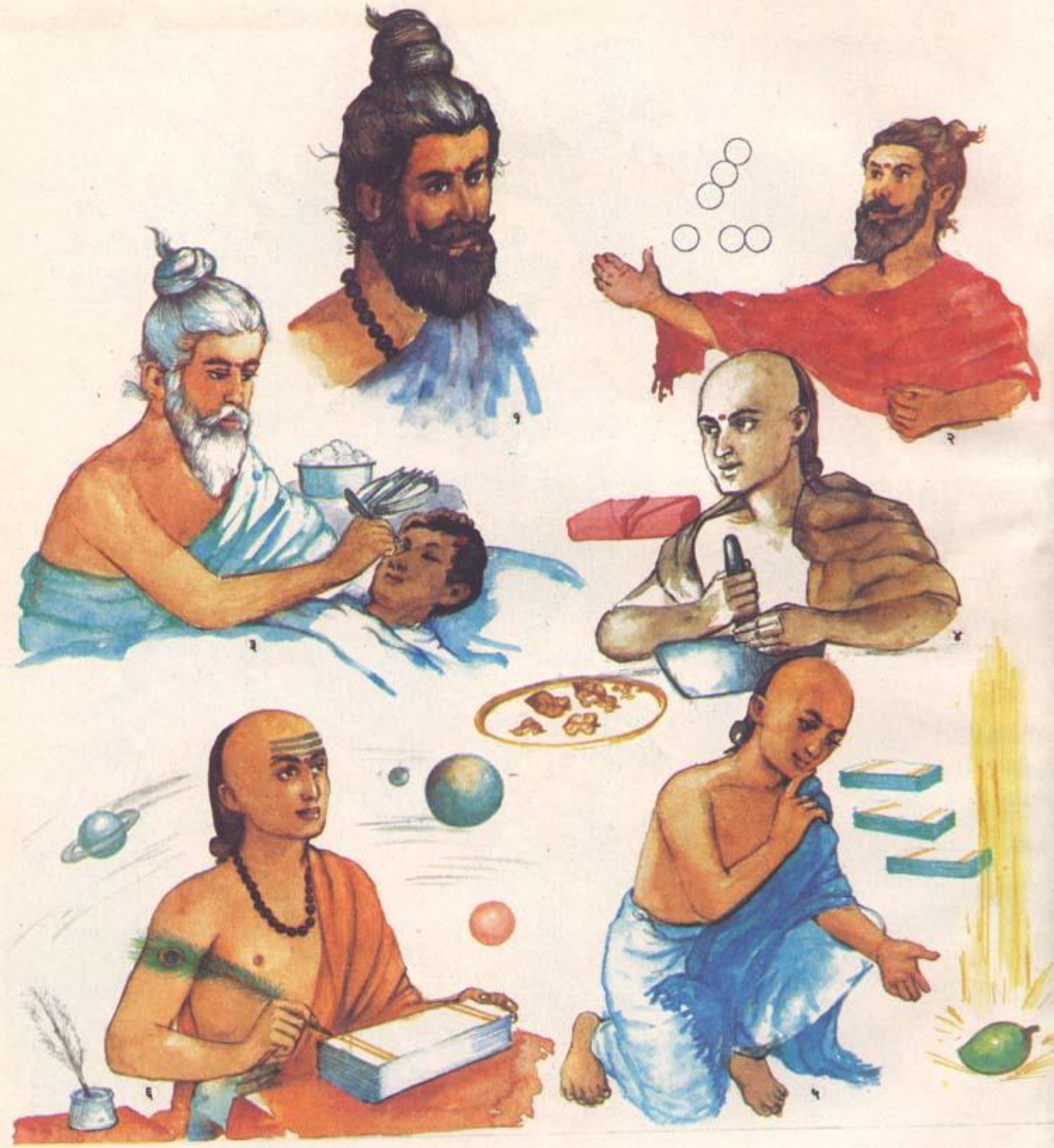

वैज्ञानिकाश्च कपिलः कणादः सुश्रुतस्तथा।
चरको भास्कराचार्यो वराहमिहिरः सुधीः ॥२६॥

श्रेष्ठ बुद्धि वाले वैज्ञानिकों में (१) कपिल मुनि (२) कणाद ऋषि, (३) आचार्य सुश्रुत, (४) चरक, (५) भास्कराचार्य,

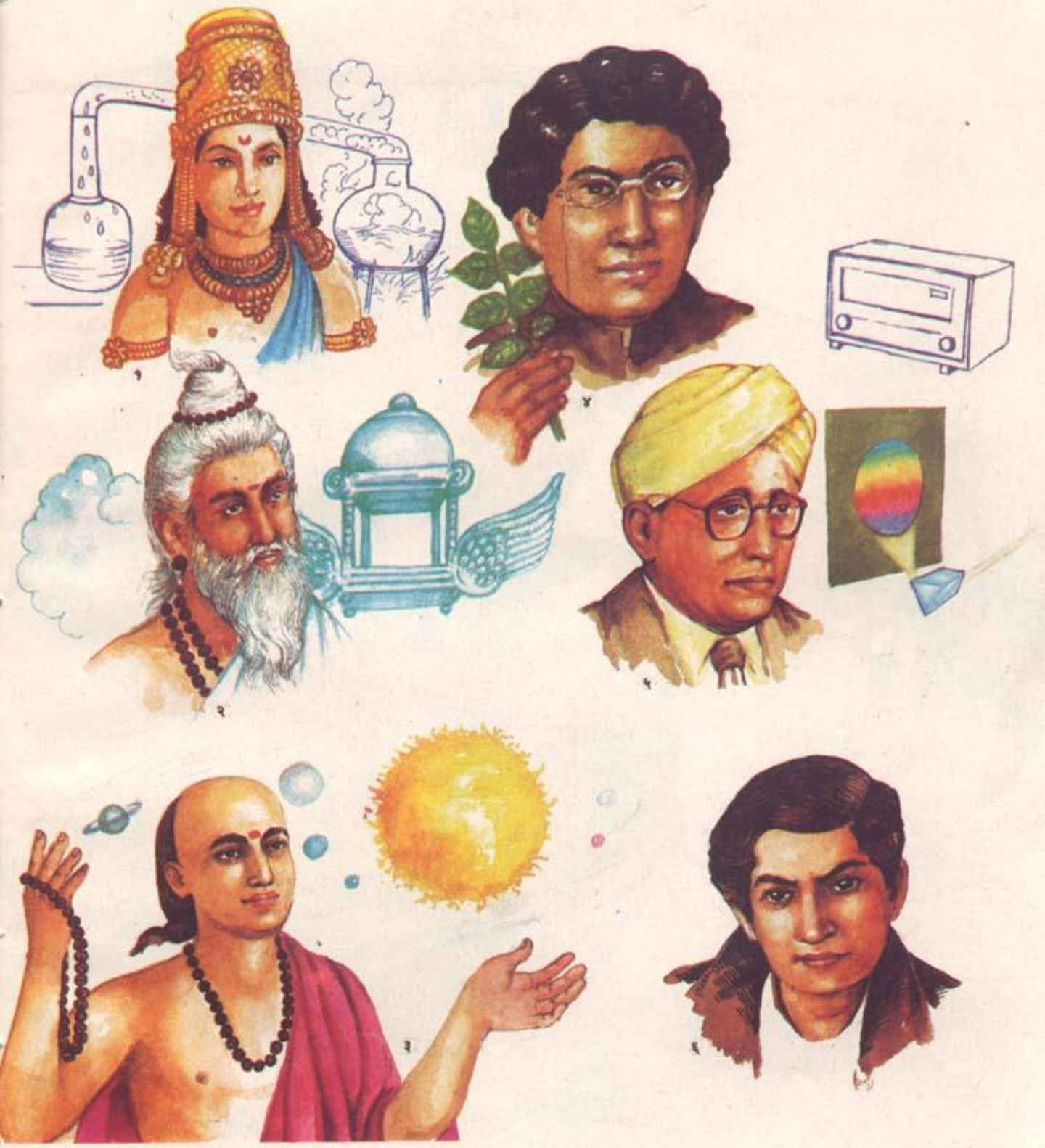

नागार्जुनो भरद्वाज आर्यभट्टो वसुर्बुधः।
ध्येयो वेङ्कटरामश्च विज्ञा रामानुजादयः ॥२७॥

(१) नागार्जुन, (२) भरद्वाज ऋषि, (३) आर्यभट्ट, (४) जगदीशचन्द्र वसु, (५) चन्द्रशेखर वेंकटरमण, (६) रामानुजन्, (पूर्वश्लोक में वर्णित वैज्ञानिकों सहित) ध्यान करने योग्य विद्वान् हैं। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

रामकृष्णो दयानन्दो रवीन्द्रो राममोहनः ।
रामतीर्थोऽरविन्दश्च विवेकानन्द उद्यशाः ॥२८॥

(१) रामकृष्ण परमहंस, (२) स्वामी दयानन्द सरस्वती, (३) रवीन्द्रनाथ ठाकुर, (४) राजा राममोहन राय, (५) स्वामी रामतीर्थ, (६) अरविन्द, (७) स्वामी विवेकानन्द — ये (तथा पूर्वश्लोक में वर्णित महापुरुष) उच्च यश वाले हुए हैं। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

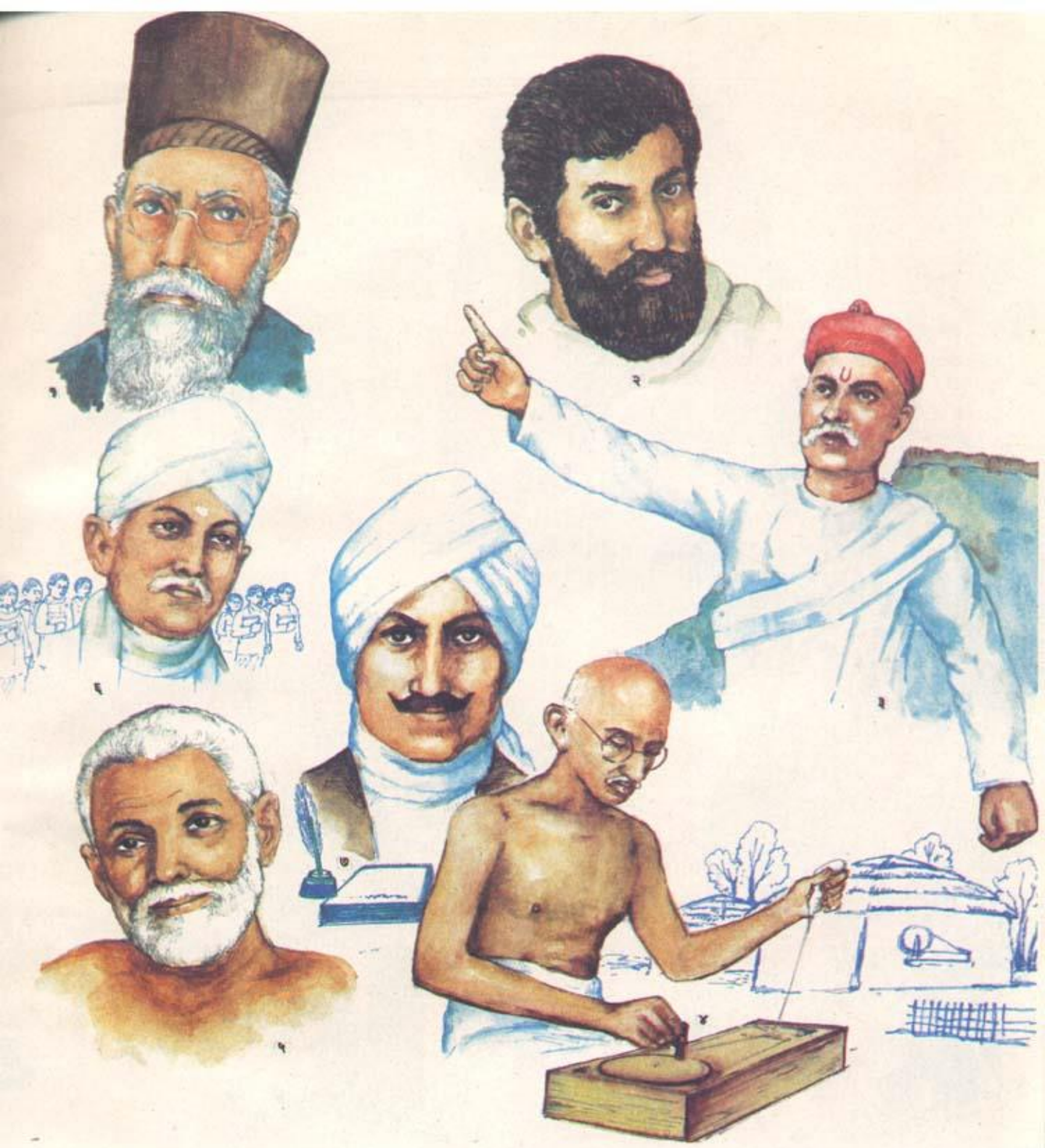

दादाभाई गोपबन्धुः तिलको गान्धिरादृताः ।
रमणो मालवीयश्च श्रीसुब्रह्मण्यभारती ॥२६॥

(१) दादाभाई नौरोजी, (२) गोपबन्धुदास, (३) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, (४) महात्मा गांधी, (५) रमण महर्षि, (६) महामना मदनमोहन मालवीय, (७) सुब्रह्मण्य भारती — ये आदरणीय महापुरुष हुए हैं। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

सुभाषः प्रणवानन्दः क्रान्तिवीरो विनायकः ।
ठक्करो भीमरावश्च फुले नारायणो गुरुः ॥३०॥

(१) सुभाषचन्द्र बोस, (२) स्वामी प्रणवानन्द, (३) स्वातन्त्र्यवीर विनायक सावरकर, (४) ठक्कर बाप्पा, (५) डा० भीमराव अम्बेडकर, (६) महात्मा फुले, (७) नारायण गुरु *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

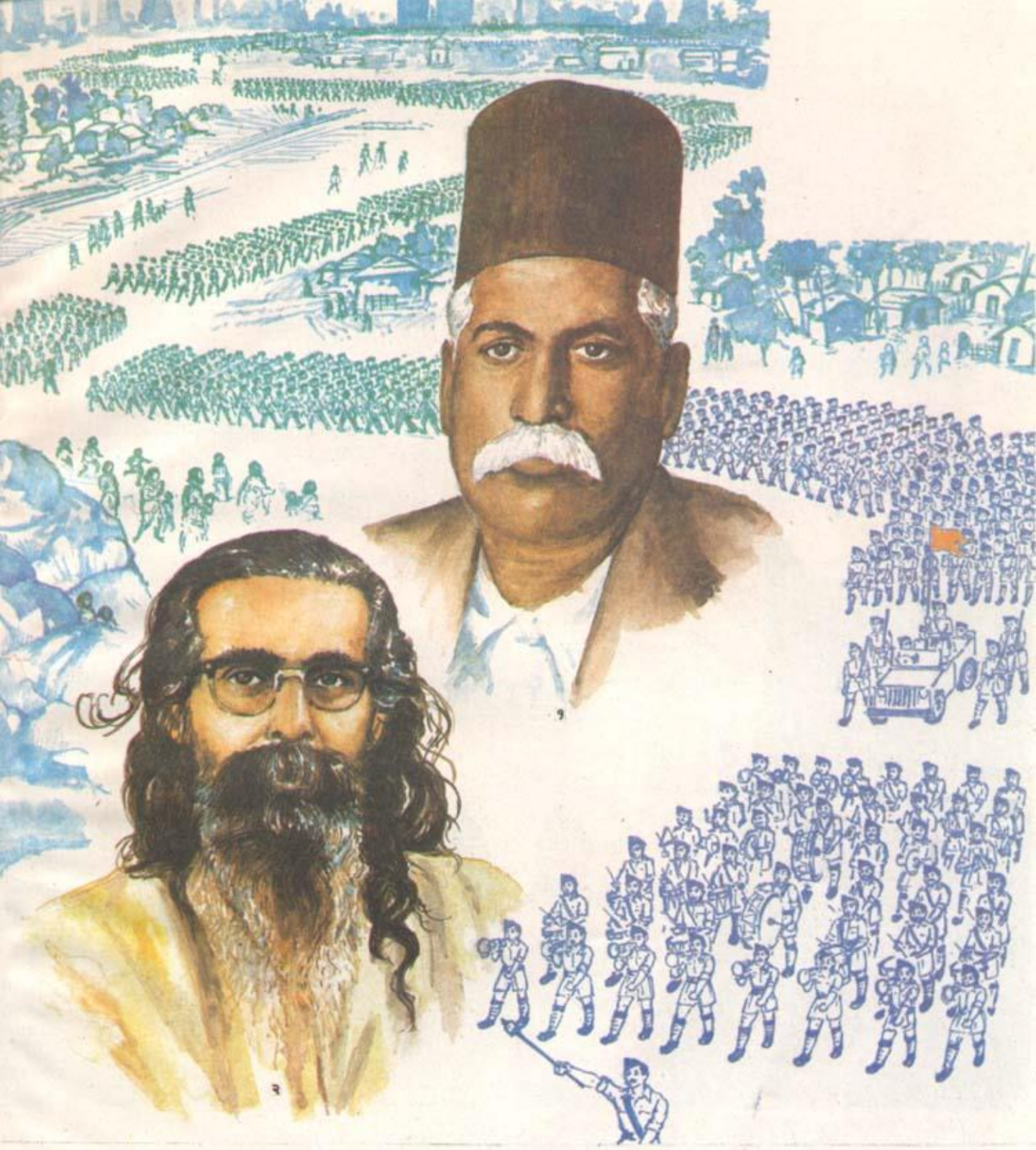

संघशक्तिप्रणेतारौ केशवोमाधवस्तथा ।
स्मरणीया सदैवैते नवचैतन्यदायकाः ॥३१॥

संघशक्ति के प्रणेता (१) डा० केशवराव बलिराम हेडगेवार तथा (२) माधवराव सदाशिव गोलवलकर (और एकात्मता स्तोत्र में पूर्व - वर्णित सभी महापुरुष एवं देवियाँ) नवचेतना प्रदान करने वाली विभूतियाँ हैं तथा सदैव स्मरण रखने योग्य हैं। *(भारत एकात्मता स्तोत्र)*

अनुक्तायें भक्ताः प्रभुचरण संसक्तहृदयाः
अनिर्दिष्टावीरा अधिसमरमुध्वस्त रिपवः |
समाजोद्धर्तारः सुहितकर विज्ञाननिपुणाः
नमस्तेभ्यो भूयात सकलसुजनेभ्यः प्रतिदिनम ||३२||

2008 1 26